Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 12 ~ Issue 4 (April 2024) pp: 343-347
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

शिवानी के उपन्यासों में कुमाऊँनी लोकजीवन, संस्कृति और सामाजिक यथार्थ

डॉ. जया सिंह

विभागाध्यक्ष, कला एवं मानविकी विभाग

द आई सी एफ ए आई विश्वविद्यालय,रायपुर कुम्हारी

सारांश

गौरा पंत 'शिवानी' हिंदी कथा-साहित्य की उन महत्वपूर्ण रचनाकारों में हैं जिन्होंने अपने साहित्य में कुमाऊँ के लोकजीवन, प्राकृतिक परिवेश, सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक परंपराओं को विशिष्ट स्थान दिया। यद्यपि उनका जन्म राजकोट में हुआ और उनका जीवन विभिन्न सांस्कृतिक परिवेशों से प्रभावित रहा, फिर भी कुमाऊँ उनकी रचनात्मक चेतना का महत्वपूर्ण आधार बना। उनके कथा-साहित्य में पर्वतीय समाज केवल भौगोलिक पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि वह पात्रों के जीवन, व्यवहार, भाषा, विश्वास, संबंधों और मानसिकता को प्रभावित करने वाली सक्रिय शक्ति के रूप में उपस्थित है।शिवानी के उपन्यासों में कुमाऊँ की प्रकृति, पर्वतीय जीवन की कठिनाइयाँ, पारिवारिक संरचना, लोकविश्वास, धार्मिक आस्थाएँ, सामाजिक प्रतिष्ठा, जातीय संबंध, स्त्री की स्थिति तथा बदलते सामाजिक मूल्यों का चित्रण मिलता है।'कालिंदी', 'कृष्णकली', 'चौदह फेरे', 'भैरवी' आदि रचनाओं के संदर्भ में यह देखा जा सकता है कि लेखिका ने अंचल विशेष को केवल रोमानी सौंदर्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसके भीतर मौजूद सामाजिक विषमताओं और मानसिक संघर्षों को भी सामने रखा।प्रस्तुत शोध-पत्र में शिवानी के उपन्यासों में कुमाऊँनी लोक-संस्कृति के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण किया गया है। प्रकृति और मनुष्य का संबंध, लोकभाषा एवं शब्दावली, धार्मिक विश्वास, रीति-रिवाज, स्त्री जीवन, ग्रामीण सामाजिक संरचना और परंपरा-आधुनिकता का द्वंद्व इसके प्रमुख अध्ययन-बिंदु हैं। शिवानी का अंचल-बोध उनके साहित्य को विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान देता है और साथ ही भारतीय समाज के व्यापक यथार्थ से जोड़ता है।

बीज-शब्द *-शिवानी, गौरा पंत, कुमाऊँ, लोकजीवन, लोकसंस्कृति, अंचल, सामाजिक यथार्थ, पर्वतीय समाज, लोकविश्वास, प्रकृति, परंपरा, आधुनिकता।*

प्रस्तावना-

हिंदी साहित्य में अंचल विशेष की संस्कृति और लोकजीवन को साहित्यिक अभिव्यक्ति देने की समृद्ध परंपरा रही है। किसी क्षेत्र की भाषा, प्रकृति, लोकविश्वास, सामाजिक संबंध और जीवन-पद्धति साहित्य को विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। गौरा पंत 'शिवानी' का कथा-साहित्य इसी संदर्भ में महत्वपूर्ण है।शिवानी का संबंध कुमाऊँ से पारिवारिक और सांस्कृतिक स्तर पर रहा। उनके साहित्य में कुमाऊँ की पहाड़ी प्रकृति, ग्रामीण परिवेश और लोकजीवन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उपलब्ध आलोचनात्मक अध्ययनों में भी यह माना गया है कि उन्होंने कुमाऊँ के सामाजिक जीवन को अपनी कथा-रचनाओं में प्रमुखता दी। उनके लिए कुमाऊँ केवल पहाड़ों और प्राकृतिक सौंदर्य का नाम नहीं है। वहाँ रहने वाले लोगों की मानसिकता, उनके विश्वास, पारिवारिक संबंध, सामाजिक प्रतिष्ठा, धार्मिक आस्थाएँ और जीवन की कठिनाइयाँ मिलकर कुमाऊँ का वास्तविक रूप निर्मित करते हैं।

शोध की समस्या और औचित्य-

आंचलिक साहित्य में किसी क्षेत्र का चित्रण केवल उसके भौगोलिक विवरण तक सीमित नहीं होता। वास्तविक अंचल-बोध तब विकसित होता है जब लेखक उस क्षेत्र की जीवन-प्रणाली को उसके भीतर से समझता है।शिवानी के साहित्य में कुमाऊँ की उपस्थिति इसी कारण महत्वपूर्ण है। वे पहाड़ी जीवन की सुंदरता के साथ उसके संघर्षों को भी सामने लाती हैं। ग्रामीण समाज में अंधविश्वास, सामाजिक दबाव और परंपराओं का प्रभाव उनके कथा-संसार का हिस्सा है। एक आलोचनात्मक अध्ययन में 'कालिंदी' आदि रचनाओं के संदर्भ में लोकविश्वास और अंधविश्वास के प्रभाव का उल्लेख मिलता है। [2]इसलिए शिवानी के उपन्यासों का कुमाऊँ के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में अध्ययन हिंदी के अंचल साहित्य को समझने की दृष्टि से उपयोगी है।

शोध के उद्देश्य-

1. इस अध्ययन शिवानी के उपन्यासों में कुमाऊँ के लोकजीवन का अध्ययन करना।
2. पर्वतीय प्रकृति और मानवीय जीवन के संबंध को समझना।
3. लोकविश्वास और धार्मिक आस्थाओं का विश्लेषण करना।
4. कुमाऊँनी सामाजिक संरचना और पारिवारिक संबंधों का अध्ययन करना।
5. लोकभाषा और सांस्कृतिक शब्दावली के प्रयोग को समझना।
6. स्त्री जीवन और अंचलीय समाज के संबंध का विश्लेषण करना।
7. परंपरा और आधुनिकता के संघर्ष को रेखांकित करना।

के प्रमुख उद्देश्य—

शोध-पद्धति-

प्रस्तुत शोध मुख्यतः विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है। शिवानी की प्रमुख कृतियों को प्राथमिक साहित्यिक आधार मानते हुए उपलब्ध आलोचनात्मक लेखों, संस्थागत परिचयों और शोध-सामग्री का संदर्भ लिया गया है।

शिवानी का अंचल-बोध- शिवानी के साहित्य में अंचल-बोध बहुस्तरीय है। इसमें भौगोलिक वातावरण के साथ सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण भी शामिल है।उनकी रचनाओं में पहाड़ केवल सुंदर दृश्य नहीं है। पहाड़ मनुष्य के जीवन की गति को निर्धारित करता है। कठिन भौगोलिक परिस्थितियाँ, सीमित संसाधन, सामाजिक निकटता और परंपरागत जीवन-व्यवस्था पात्रों की मानसिकता को प्रभावित करती हैं।इसी कारण शिवानी का कुमाऊँ एक जीवंत सामाजिक संसार बन जाता है। उनके पात्र उस संसार के भीतर जीते हैं, संघर्ष करते हैं और अपने संबंधों को विकसित करते हैं।

प्रकृति और मानवीय जीवन-कुमाऊँ के प्राकृतिक परिवेश का शिवानी के कथा-साहित्य में विशेष महत्व है। पहाड़, जंगल, वृक्ष, मौसम और घाटियाँ कथा के वातावरण का निर्माण करते हैं।लेकिन प्रकृति केवल सजावटी तत्व नहीं है। वह पात्रों की भावनाओं के साथ जुड़ती है। सुख-दुःख, प्रेम-विरह, आशा-निराशा आदि को प्रकृति के माध्यम से अधिक प्रभावशाली बनाया जाता है।पर्वतीय वातावरण पात्रों के जीवन में कठिनाई भी उत्पन्न करता है। दूरी, आवागमन की समस्या और संसाधनों की सीमाएँ सामाजिक जीवन को प्रभावित करती हैं। इस तरह प्रकृति और समाज का संबंध शिवानी के कथा-साहित्य में परस्पर जुड़ा हुआ दिखाई देता है।

लोकविश्वास और अंधविश्वास-ग्रामीण समाज में लोकविश्वास जीवन का महत्वपूर्ण अंग होते हैं। शिवानी ने इन्हें अपने कथा-संसार में स्थान दिया है। शुभ-अशुभ संकेत, देवी-देवताओं में आस्था, मनौती, धार्मिक अनुष्ठान और प्राकृतिक घटनाओं की पारंपरिक व्याख्या उनके पात्रों की मानसिकता का हिस्सा हैं।'कालिंदी' के संदर्भ में उपलब्ध आलोचनात्मक अध्ययन में भी लोकविश्वास और अंधविश्वास के प्रभाव को रेखांकित किया गया है। [2]शिवानी इन विश्वासों को केवल हास्यास्पद बनाकर प्रस्तुत नहीं करतीं। वे दिखाती हैं कि ये विश्वास लोगों के निर्णयों और भावनाओं को किस तरह प्रभावित करते हैं। इससे उनका साहित्य सामाजिक मनोविज्ञान का रूप ग्रहण करता है।

धार्मिक आस्था और लोक-संस्कृति-कुमाऊँ के लोकजीवन में धार्मिक आस्था और सामाजिक जीवन एक-दूसरे से जुड़े हैं। पूजा-पाठ, देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धा और धार्मिक अवसर सामुदायिक जीवन को जोड़ते हैं।शिवानी के पात्र इन आस्थाओं के साथ जीते हैं। धार्मिकता कई बार उन्हें मानसिक सहारा देती है, तो कई बार रूढ़ियाँ उनके जीवन को सीमित भी करती हैं।यह दोहरा

स्वरूप शिवानी की सामाजिक दृष्टि को महत्वपूर्ण बनाता है। वे न तो लोकविश्वासों को पूरी तरह खारिज करती हैं और न उन्हें आदर्श बनाती हैं। उनके साहित्य में वे जीवन के वास्तविक अनुभवों के रूप में उपस्थित हैं।

पारिवारिक संरचना-कुमाऊँनी समाज के चित्रण में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है। परिवार व्यक्ति की सामाजिक पहचान निर्धारित करता है। विवाह, रिश्तेदारी, संपत्ति, प्रतिष्ठा और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करती हैं।शिवानी के उपन्यासों में परिवार कई बार सुरक्षा का आधार बनता है, लेकिन वही परिवार व्यक्ति की स्वतंत्रता पर नियंत्रण भी स्थापित करता है।विशेष रूप से स्त्री के लिए परिवार दोहरी भूमिका निभाता है। वह उसका भावनात्मक संसार भी है और सामाजिक दबाव का प्रमुख केंद्र भी। इस विरोधाभास को शिवानी ने अपने स्त्री पात्रों के माध्यम से प्रभावी ढंग से व्यक्त किया है।

कुमाऊँनी समाज में स्त्री- शिवानी के कुमाऊँ-आधारित कथा-साहित्य में स्त्री केवल पारिवारिक भूमिका तक सीमित नहीं रहती। वह सामाजिक जीवन की सक्रिय सहभागी है।पर्वतीय समाज में स्त्री के श्रम और जिम्मेदारियों का महत्व है। घरेलू जीवन, परिवार की देखभाल और सामाजिक संबंधों में उसकी सक्रिय भूमिका दिखाई देती है। फिर भी सामाजिक निर्णयों में पुरुष-प्रधानता और पारंपरिक मान्यताओं का प्रभाव बना रहता है।यहीं से शिवानी के साहित्य में स्त्री चेतना और अंचल-बोध एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं।

लोकभाषा और शब्द-संस्कृति -शिवानी की भाषा उनकी साहित्यिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। उनकी भाषा में संस्कृतनिष्ठ हिंदी के साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं और अंचलीय शब्दों का प्रभाव दिखाई देता है।एक आलोचनात्मक अध्ययन के अनुसार उनके साहित्य में कुमाऊँनी लोकजीवन के साथ तत्सम और समासयुक्त शब्दावली तथा बंगाली प्रभाव भी देखा जा सकता है। [3]भाषा का यह बहुरंगी रूप उनके साहित्य को सांस्कृतिक विविधता प्रदान करता है। लोकशब्द पात्रों को स्थानीय पहचान देते हैं और कथानक को कृत्रिम होने से बचाते हैं।

सामाजिक प्रतिष्ठा और वर्ग-बोध-पर्वतीय समाज में सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न शिवानी के कथा-संसार में महत्वपूर्ण है। परिवार की प्रतिष्ठा, विवाह-संबंध और सामाजिक मान्यता व्यक्ति के निर्णयों को प्रभावित करती है।कई पात्र अपने व्यक्तिगत सुख से अधिक सामाजिक स्वीकार्यता को महत्व देते हैं। इससे व्यक्तिगत इच्छा और सामाजिक अपेक्षा के बीच संघर्ष उत्पन्न होता है।यह संघर्ष केवल कुमाऊँ तक सीमित नहीं है; बल्कि भारतीय समाज की व्यापक संरचना का प्रतिनिधित्व करता है। इस कारण शिवानी का अंचल-चित्रण व्यापक सामाजिक यथार्थ का रूप ग्रहण करता है।

कालिंदी' और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश'-कालिंदी' शिवानी की प्रमुख रचनाओं में गिनी जाती है। इसमें कुमाऊँ के सामाजिक वातावरण और स्त्री जीवन के अनेक पक्षों को देखने की संभावनाएँ हैं।कथा-संसार में लोकविश्वास, परिवार, संबंध और सामाजिक मान्यताएँ पात्रों के जीवन को प्रभावित करती हैं। प्रकृति और सामाजिक परिवेश एक-दूसरे से अलग नहीं हैं।'कालिंदी' के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि शिवानी के लिए अंचल किसी बाहरी दृश्य का नाम नहीं, बल्कि पात्रों की मानसिकता और सामाजिक व्यवहार का आधार है।

'कृष्णकली' और सांस्कृतिक संदर्भ-'कृष्णकली' शिवानी की सबसे चर्चित कृतियों में से एक है। यह रचना उनके कथा-कौशल और चरित्र-निर्माण के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय मानी जाती है।शिवानी केंद्र के अनुसार 'कृष्णकली' को हिंदी पत्रिकाओं में धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया गया था और इससे शिवानी को व्यापक लोकप्रियता मिली। इस में व्यक्ति और समाज, भावनात्मक संबंध तथा सामाजिक मान्यताओं के बीच संबंधों का अध्ययन किया जा सकता है। यहाँ भी सांस्कृतिक परिवेश पात्रों के जीवन को आकार देता है।

परंपरा और आधुनिकता- शिवानी के उपन्यासों में परंपरा और आधुनिकता का संघर्ष लगातार दिखाई देता है। नई शिक्षा, बदलती जीवन-शैली और व्यक्तिगत स्वतंत्रता एक ओर हैं, तो दूसरी ओर परिवार, जातीय परंपरा, धार्मिक विश्वास और सामाजिक प्रतिष्ठा हैं।उनके पात्र इन दोनों के बीच फँसे हुए दिखाई देते हैं। वे पूरी तरह पुराने संसार में नहीं रह सकते, लेकिन आधुनिकता को पूरी तरह स्वीकार भी नहीं कर पाते।इस संक्रमणशील स्थिति को शिवानी ने संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। यही कारण है कि उनका अंचल-साहित्य केवल अतीत का दस्तावेज नहीं बनता, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी दस्तावेज बन जाता है।

अंधविश्वास और सामाजिक चेतना- लोकविश्वास के चित्रण के साथ शिवानी सामाजिक चेतना का पक्ष भी सामने रखती हैं। ग्रामीण समाज में किसी घटना की व्याख्या कई बार धार्मिक या अंधविश्वासी दृष्टिकोण से की जाती है।इसका प्रभाव विशेष रूप से स्त्रियों और कमजोर सामाजिक वर्गों पर पड़ सकता है। शिवानी ऐसे प्रसंगों के माध्यम से यह दिखाती हैं कि विश्वास किस प्रकार सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं।उनकी दृष्टि उपदेशात्मक नहीं है। वे जीवन को उसके स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करती हैं और पाठक को उसके भीतर मौजूद जटिलताओं को समझने का अवसर देती हैं।

कुमाऊँ और व्यापक भारतीय समाज- शिवानी के कुमाऊँ का महत्व इसलिए भी है कि वह एक विशिष्ट क्षेत्र होते हुए भी भारतीय समाज की अनेक सामान्य समस्याओं को सामने लाता है।परिवार, विवाह, स्त्री की स्थिति, सामाजिक प्रतिष्ठा, परंपरा, धार्मिक विश्वास और आधुनिकता की चुनौती—ये सभी प्रश्न पूरे भारतीय समाज में विभिन्न रूपों में उपस्थित रहे हैं।इसलिए शिवानी का अंचल साहित्य सीमित भौगोलिक साहित्य नहीं है। उसमें स्थानीयता के माध्यम से व्यापक भारतीयता का बोध विकसित होता है।

शिवानी की सांस्कृतिक दृष्टि- शिवानी की सांस्कृतिक दृष्टि बहुलतावादी है। उनके जीवन पर कुमाऊँ के साथ बंगाल और अन्य सांस्कृतिक परिवेशों का भी प्रभाव रहा। शांतिनिकेतन में बिताए वर्षों ने उनके अनुभव संसार को विस्तृत किया। [1]इस बहुसांस्कृतिक अनुभव के कारण उनकी रचनाओं में केवल एक क्षेत्र की संकीर्णता नहीं दिखाई देती। वे स्थानीय जीवन को व्यापक भारतीय सांस्कृतिक अनुभव से जोड़ती हैं।

सामाजिक यथार्थ और सौंदर्य-बोध-शिवानी के साहित्य में सौंदर्य का महत्व है, लेकिन यह सौंदर्य सामाजिक यथार्थ से अलग नहीं है। प्रकृति की सुंदरता के साथ मनुष्य का दुःख, संघर्ष और सामाजिक विषमता भी उपस्थित रहती है।इसी संतुलन के कारण उनका साहित्य केवल रोमानी या मनोरंजक साहित्य नहीं रह जाता। उसमें सामाजिक जीवन की जटिलता भी मौजूद रहती है।

निष्कर्ष

शिवानी के उपन्यासों में कुमाऊँ का लोकजीवन एक जीवंत सांस्कृतिक संसार के रूप में उपस्थित है। उनकी रचनाओं में पहाड़, प्रकृति, लोकविश्वास, धार्मिक आस्था, परिवार, स्त्री जीवन, सामाजिक प्रतिष्ठा और बदलते मूल्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।शिवानी की विशेषता यह है कि उन्होंने कुमाऊँ को केवल प्राकृतिक सौंदर्य के माध्यम से प्रस्तुत नहीं किया। उन्होंने वहाँ के मनुष्य को केंद्र में रखा। उनके पात्रों के माध्यम से कुमाऊँ के सामाजिक संबंध, पारिवारिक संरचना, लोकविश्वास और मानसिक संसार सामने आता है।उनका अंचल-बोध स्थानीय होते हुए भी व्यापक भारतीय सामाजिक यथार्थ से जुड़ जाता है। परंपरा और आधुनिकता का संघर्ष, स्त्री की स्थिति, परिवार का दबाव और व्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे प्रश्न कुमाऊँ की सीमाओं से आगे बढ़कर भारतीय समाज के प्रश्न बन जाते हैं।अतः शिवानी का साहित्य कुमाऊँ की संस्कृति का साहित्यिक दस्तावेज होने के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन का संवेदनात्मक आख्यान भी है। उनकी रचनाएँ यह सिद्ध करती हैं कि किसी अंचल का सच्चा चित्रण केवल वहाँ की भौगोलिक सुंदरता को प्रस्तुत करने से नहीं होता, बल्कि उसके मनुष्य, संस्कृति और जीवन-मूल्यों को समझने से होता है।

संदर्भ-सूची

शिवानी केंद्र, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर — "गौरा पंत की स्मृति में।" **I**Indian Institute of Technology Kanpur

लुहार, हीरा लाल. "शिवानी के उपन्यास और सामाजिक-सांस्कृतिक संवेदना।" *अपनी माटी*, 2016.

कौशिक, निधि. "शिवानी की कहानियों में स्त्री अस्मिता का संघर्ष।" *International Journal of Reviews and Research in Social Sciences*, 2016. **I**IJRRSS Online

भारत सरकार, राजभाषा विभाग — "गौरा पंत–शिवानी।"

राजबाला. "गौरा पंत-शिवानी: हिंदी साहित्य की महान उपन्यासकार।" *International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research*, Vol. 5, Issue 12, 2018.

पंत, गौरा 'शिवानी'. *कृष्णकली*। विभिन्न संस्करण।

पंत, गौरा 'शिवानी'. *कालिंदी*। विभिन्न संस्करण।

पंत, गौरा 'शिवानी'. *चौदह फेरे*। विभिन्न संस्करण।

पंत, गौरा 'शिवानी'. *भैरवी*। विभिन्न संस्करण।

पंत, गौरा 'शिवानी'. *आमादेर शांतिनिकेतन*। विभिन्न संस्करण।